प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 3 (2019-20)

हिन्दी - अ (कोड-002)

कक्षा- 10

निर्धारित समय- 3 घंटे **अधिकतम अंक - 80**

सामान्य निर्देशः-

1. इस प्रश्न-पत्र में चार खंड हैं- क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड-क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 10

यह बात भी ध्यान में रखने की है कि मध्यकालीन भारत यानी इतिहास का वह लंबा दौर जो विदेशी आक्रांताओं के हमलों, पराधीनता और भारी उथल-पुथल का रहा है; उसमें बाल-साहित्य के क्षेत्र में बहुत कम काम हुआ है। यहाँ तक कि भारतेंदु तथा द्विवेदी युग में भी जब साहित्य की दूसरी विधाओं में नए-नए प्रयोग हो रहे थे, तब बाल-साहित्य के क्षेत्र में प्रायः जड़ता ही व्याप्त रही। जिन थोड़े-से साहित्यकारों ने बाल-साहित्य की धारा को नया मोड़ देने की कोशिश की, परंपरावादियों के वर्चस्व के कारण उनका प्रभाव बहुत सीमित रहा। इससे हम अंदाजा लगा सकते हैं कि गुलाम मानसिकताएँ प्रायः अपने भविष्य की ओर से मुँह मोड़े रहती हैं। उनमें अपने भविष्य निर्माण हेतु जरूरी चेतना का अभाव होता है।

1. गुलाम मानसिकता किसकी ओर से मुँह मोड़े रहती है? 2

उत्तर : गुलाम मानसिकता भविष्य की ओर से मुँह मोड़े रहती है।

2. मध्यकालीन भारत में किस क्षेत्र में कम काम हुआ है? क्यों? 2

उत्तर : मध्यकालीन भारत में बाल-साहित्य के क्षेत्र में बहुत कम काम हुआ है, क्योंकि यह काल विदेशी आक्रांताओं के हमलों और पराधीनता के कारण बहुत उथल-पुथल वाला रहा है।

3. किस युग में बाल-साहित्य के क्षेत्र में जड़ता व्याप्त रही और क्यों? 2

उत्तर : भारतेंदु तथा द्विवेदी युग में बाल-साहित्य के क्षेत्र में जड़ता व्याप्त रही क्योंकि इस युग में साहित्य की दूसरी विधाओं में नए-नए प्रयोग किए जा रहे थे।

4. कुछ साहित्यकारों ने किसे नया मोड़ देने की कोशिश की परंतु किस कारण उनका प्रभाव सीमित रहा? 2

उत्तर : कुछ साहित्यकारों ने बाल-साहित्य की धारा को नया मोड़ देने की कोशिश की, परंतु परंपरावादियों के वर्चस्व के कारण उनका प्रभाव बहुत सीमित रहा।

5. किस युग में नए-नए प्रयोग हो रहे थे? 1

उत्तर : भारतेंदु और द्विवेदी युग में नए-नए प्रयोग हो रहे थे।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : मध्यकालीन भारत का इतिहास।

खण्ड-ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. मजदूर खूब मेहनत करता है, परन्तु उसे लाभ नहीं मिलता। (रचना के अनुसार वाक्य भेद लिखिए)

उत्तर : संयुक्त वाक्य

2. बारिश हो रही थी, इसलिए कपड़े भीग गए। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : बारिश होने से कपड़े भीग गए।

3. मैंने एक बहुत बीमार आदमी को देखा। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : मैंने एक आदमी देखा, जो बहुत बीमार था।

4. जो व्यक्ति परिश्रम करता है, उसे सब चाहते हैं। (रचना के आधार पर वाक्य भेद लिखिए)

उत्तर : मिश्र वाक्य

3. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. पायल भजन गाती है। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : पायल द्वारा भजन गाया जाता है।

2. पुराने गायक बहुत अच्छे गीत गाते थे। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : पुराने गायकों द्वारा बहुत अच्छे गीत गाए जाते थे।

3. हम रातभर कैसे जागेंगे? (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : हमसे रातभर कैसे जागा जाएगा।

4. बंदर द्वारा पुस्तक फाड़ी गई। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : बंदर ने पुस्तक फाड़ दी।

4. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. मोहन घर चला गया।

उत्तर : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्म कारक, **चला गया** क्रिया का कर्म।

2. शिकारी ने कबूतर पर चुपचाप निशाना साधा।

उत्तर : रीतिवाचक क्रियाविशेषण, **निशाना साधा** क्रिया की विधि बता रहा है।

3. यह किताब मेरी है।

उत्तर : सार्वनामिक विशेषण, उभय लिंग, एकवचन, इसका विशेष्य **किताब** है।

4. आज समाज में विभीषणों की कमी नहीं है।

उत्तर : जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन, पुल्लिंग, संबंध कारक।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- $1 \times 4 = 4$

1. काबा फिरि कासीं भया रामहिं भया रहीम।
मोट चून मैदा भया, बैठि कबीरा जीमि।।

उत्तर : शांत रस।

2. अभी तो मुकुट बँधा था माथ
हुए कल ही हल्दी के हाथ।

उत्तर : करूण रस।

3. ललन चलन सुनि पलन में आय गयो बहु नीर।
अधखण्डित बीरी रही, पीरी परी सरीर।।

उत्तर : वियोग श्रृंगार रस।

4. अँखियाँ हरि दर्शन की भूखीं
कैसे रहे रूप, रस राँची, ये बतियाँ सुन रूखी।।

उत्तर : भक्ति रस।

5. **हास** किस रस का स्थायी भाव है?

उत्तर : हास्य रस

खण्ड-ग 34

(पाठ्य-पुस्तक एवं पूरक पाठ्य-पुस्तक)

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 6

फादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है। उनको देखना करूणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा था और उनसे बात करना कर्म के संकल्प से भरना था। मुझे **परिमल** के वे दिन याद आते हैं जब हम सब एक पारिवारिक रिश्ते में बँधे जैसे थे, जिसके बड़े फादर बुल्के थे। हमारे हँसी मजाक में वे निर्लिप्त शामिल रहते, हमारी गोष्ठियों में वे गंभीर बहस करते। हमारी रचनाओं पर बेबाक राय और संस्कार में वे बड़े भाई और पुरोहित जैसे खड़े होकर हमें आशीषों से भर देते।

1. लेखक की दृष्टि से फादर को याद करना, उन्हें देखना और उनसे बात करना किन अनुभवों के समान था? 2

उत्तर : लेखक की दृष्टि से फादर को याद करना एक उदास शांत संगीत सुनने जैसा था। उनको देखना करूणा के स्वच्छ जल में स्नान करने जैसा था और उनसे बात करना कर्म के संकल्प से भरना था।

2. लेखक को **परिमल** के दिनों के कौनसे घटनाक्रम याद आते हैं? 2

उत्तर : परिमल के दिनों में लेखक और उनके साथी साहित्यकारों के बीच पारिवारिक रिश्तों का सा संबंध था। उन सभी में से फादर बुल्के सबसे बड़े थे। उनके बीच जो हँसी मजाक होता, उनमें वे निर्लिप्त रहते थे परन्तु जब गोष्ठियाँ होती तो उनमें गंभीर बहस करते थे।

3. घर के उत्सव में फादर की क्या भूमिका होती थी? 2

उत्तर : घर के उत्सव में फादर की भूमिका एक बड़े भाई और पुरोहित की सी होती थी। उन अवसरों पर उनका आशीष मिलता रहता था।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए- $2 \times 4 = 8$

1. कैप्टन कौन था? उसे क्या बात आहत करती थी।

उत्तर : कैप्टन नाम का चश्मेवाला था। वह बूढ़ा, दुर्बल और लंगड़ाकर चलता था। वह सिर पर टोपी और आँखों पर काला चश्मा पहनता था तथा गली-गली जाकर चश्में बेचता था। चौराहे पर लगी नेताजी की बिना चश्मे वाली मूर्ति को देखकर वह बहुत आहत होता था क्योंकि उसके मन में नेताजी सुभाषचंद्र बोस के लिए अपार श्रद्धा थी।

2. लेखक ने लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वालों की किस विशेषता को प्रकट किया है?

उत्तर : लेखक ने लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वालों के विषय में बताया कि स्टेशन पर खीरा बेचने वाले खीरे के इस्तेमाल का तरीका जानते हैं। अतः खीरे के साथ-साथ जीरा मिला नमक और लाल मिर्च की पुड़िया भी देते हैं।

3. बिस्मिल्लाह खाँ काशी छोड़ना क्यों नहीं चाहते थे?

उत्तर : बिस्मिल्लाह खाँ काशी और शहनाई को अपनी जन्नत मानते थे। काशी ही उनकी जन्म और कर्मभूमि थी। गंगा मैया, काशी विश्वनाथ और बालाजी मंदिर में उनकी गहरी आस्था थी। इसी कारण वे काशी छोड़कर कहीं नहीं जाना चाहते थे।

4. **एक कहानी यह भी** के आधार पर स्वाधीनता आन्दोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका बताइए।

उत्तर : **एक कहानी यह भी** के आधार पर स्वाधीनता आन्द-ोलन का सन् 1946-47 का दौर अत्यंत जोशीला था। उसमें हर युवा के मन में उन्माद व देश के लिए मर मिटने की भावना हिलोरें लेती थीं। मन्नू भण्डारी भी उन्ही युवाओं में से एक देशप्रेम की भावना से परिपूर्ण थीं। मन्नू भण्डारी आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी न लेकर अप्रत्यक्ष रूप से देशप्रेम के जोशीले साहित्य की रचना के द्वारा, भाषणों द्वारा संगठन तैयार करके सहयोग दिया।

5. बालगोबिन भगत का संगीत किस प्रकार लोगों के सिर चढ़कर बोलता था?

उत्तर : आषाढ़ के दिन में जब समूचा गाँव खेतों में उमड़ पड़ता था तो बालगोबिन भगत कीचड़ में सने धान की रोपाई करते हुए गीत गाने लगते। उनका संगीत लोगों पर जादू कर देता था। औरतों के होंठ काँपने लगते और वे गुनगुनाने लगतीं। बच्चे झूम उठते। हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते। रोपनी करने वालों की उँगलियाँ उसी क्रम से चलने लगतीं। लोगों के हाथ-पाँव थिरकने लगते। रात के सन्नाटे में भी लोग उनके पास खिंचे चले आते थे।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 6

गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपने ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार की स्थायी को संभाले रहता है
जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था

1. मुख्य गायक के भटके स्वर को संगतकार द्वारा संभाला जाता है तो कैसा लगता है? 2

उत्तर : जब संगतकार मुख्य गायक के भटके स्वर को संभालता है तो ऐसा लगता है कि मानो वह मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान समेट रहा हो। ऐसा लगता है मानो वह मुख्य गायक को उसके बचपन की याद दिलाता है कि बचपन में वह भी नौसिखिया ही था आज जैसा महान गायक नहीं था।

2. किसकी आवाज में हिचक साफ सुनाई देती है और क्यों? 2

उत्तर : मुख्य गायक के संगतकार की आवाज में हिचक साफ सुनाई देती है क्योंकि वह अपनी आवाज को मुख्य गायक की आवाज से अधिक ऊँचा उठाना नहीं चाहता। मुख्य गायक की आवाज को ऊँचाई और बल देना उसका धर्म है। वह अपने इसी धर्म का पालन करता है। अपनी श्रेष्ठता दिखाने का प्रयास नहीं करता।

3. संगतकार किस प्रकार से मुख्य गायक को ढाँढस बँधाता है? 2

उत्तर : संगतकार मुख्य गायक के पीछे लगातार गाता रहता है और उसके बुझते स्वर को संभाले रहता है। उसे अकेलेपन के एहसास से बचाता है तथा पुराने राग को फिर से गाने की प्रेरणा देता है।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए- $2 \times 4 = 8$

1. फसल को **हाथों के स्पर्श की गरिमा** और **महिमा** कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहते हैं?

उत्तर : मनुष्य का कठोर श्रम ही अनाज की भरपूर पैदावार में सहायक बनता है। मिट्‌टी और पानी की पोषकता तथा सूर्य की ऊर्जा भी तभी सार्थक होती है, जब मनुष्य लगन के साथ कड़ी मेहनत करता है। मनुष्य के श्रम करते हाथ ही उसे गरिमामय और महिमामय बनाते हैं क्योंकि फसल से ही धनी-निर्धन सबका पेट भरता है। आज के युग को भले ही मशीनी युग कहा जाता है परन्तु आज भी हमारे किसान अपने शारीरिक श्रम से फसलों का उत्पादन करते हैं।

2. लक्ष्मण परशुराम से पुनः आत्मप्रशंसा करने के लिए क्यों कहते हैं?

उत्तर : परशुराम अपनी वीरता का बखान बार-बार कर चुके हैं, फिर भी वे लगातार अपनी प्रशंसा किए जा रहे हैं। इसलिए लक्ष्मण उनसे कहते हैं कि अभी भी कुछ शेष रह गया हो तो कह डालिए। यदि आप अपने क्रोध को रोकेंगे तो आपको बहुत कष्ट होगा।

3. **कन्यादान** कविता में किसके दुख को प्रामाणिक कहा गया है और क्यों?

उत्तर : कविता में लड़की की माँ के दुख को प्रामाणिक कहा गया है क्योंकि पुत्री के चले जाने के बाद वह सच में ही अकेली रह जाएगी। उसके इस दुख की भरपाई कभी नहीं हो सकेगी।

4. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों पर क्या प्रभाव डाला?

उत्तर : योग के संदेश ने गोपियों पर यह प्रभाव डाला कि वे बहुत दुखी और उदास हो गईं। कृष्ण से मिलने और उनसे अपने मन की बात कहने की उनकी आशा समाप्त हो गई। उनकी व्याकुलता और अधिक बढ़ गई। अंत में वे कह देती हैं कि कृष्ण ने अपनी मर्यादा का ध्यान नहीं रखा इसलिए वे धैर्य नहीं धारण कर पा रही हैं।

5. मिट्टी के गुण-धर्म को आप किस तरह परिभाषित करेंगे?

उत्तर : मिट्टी अपने लाल, पीले, काले और भूरे रंग के साथ अलग-अलग पोषक गुणों से युक्त होती है। अलग-अलग प्रकार की पैदावार के लिए अलग-अलग प्रकार की मिट्टी की आवश्यकता होती है, जैसे-धान की फसल के लिए चिकनी मिट्टी, गेहूँ के लिए दोमट उपजाऊ मिट्टी, कपास के लिए काली मिट्टी और चाय के लिए पहाड़ी ढलान की आवश्यकता होती है। इस प्रकार विभिन्न फसलों के लिए भिन्न-भिन्न मिट्टी के गुण-धर्म की आवश्यकता होती है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए- $3 \times 2 = 6$

1. आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। क्या ऐसा करना उचित है?

उत्तर : आज की पीढ़ी वैज्ञानिक आविष्कारों का अंधाधुंध एवं अविवेकपूर्ण ढंग से इस्तेमाल कर रही है जिसके चलते जल, भूमि और वायु का प्रदूषण बढ़ रहा है। प्राकृतिक असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई है। ऐसा करना उचित नहीं है। इसके चलते हमारा जीवन असुरक्षित होता जा रहा है। इसे रोकने के लिए हमें निजी एवं सामूहिक स्तर पर प्रयास करने होंगे।

2. **माता का अँचल**, शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

उत्तर : प्रस्तुत कहानी में लेखक यद्यपि अपने पिता के वात्सल्य से अधिक जुड़ा दिखाई देता है फिर भी माँ उसे खिलाने-पि-लाने और कपड़े पहनाकर तैयार करने का काम करती थीं। लेखक पर जब कोई विपत्ति स्वरूप डर हावी होता, तो उसे माँ के अँचल की छाँव में ही सर्वाधिक सुरक्षा और शांति मिलती। इसलिए प्रस्तुत कहानी का शीर्षक **माता का अँचल** उपयुक्त सिद्ध होता है। इस कहानी का एक अन्य उपयुक्त शीर्षक **माँ की ममता** हो सकता है।

3. पश्चिम की नकल की प्रवृत्ति हमारे लिए कितनी नुकसानदायक है? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : भारतीयों में विदेशों, विशेष रूप से पश्चिम के देशों की नकल करने की प्रवृत्ति जोरों पर हैं। उनकी सभ्यता के जो दिखाऊ तत्व हैं, उनकी नकल करना हम अपना बड़प्पन समझते हैं। उनके खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने के कई तरीके हमने अपना लिए हैं जो किसी न किसी रूप में हमारे लिए घातक सिद्ध हुए हैं। यहाँ तक कि हमने अपनी राजभाषा हिंदी को छोड़कर विदेशी भाषा अंग्रेजी को अपना सगा बना लिया है। यह सब हमारी गु-लामी की मानसिकता को दर्शाता है और यह जाहिर करता है कि हम अपना राष्ट्रीय स्वाभिमान खोते चले जा रहे हैं।

खण्ड-घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए- 10

(1) जल संकट

संकेत बिंदु : प्रस्तावना * जल संकट के कारण * जल संकट की समस्याएँ * समाधान * उपसंहार।

(2) ओलंपिक खेल

संकेत बिंदु : प्रस्तावना - ओलम्पिक खेलों का इतिहास * ओलम्पिक खेलों का आयोजन * उपसंहार

(3) सूचना प्रौद्योगिकी का समाज पर प्रभाव

संकेत बिंदु : सूचना प्रौद्योगिकी क्या है * इसके लाभ * सूचना ढाबा * उपसंहार

उत्तर :

(1) जल संकट

संकेत बिंदु : प्रस्तावना * जल संकट के कारण * जल संकट की समस्याएँ * समाधान * उपसंहार।

प्रस्तावना- जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। समूची प्रकृति में चाहे वनस्पतियाँ हों या जीव-जंतु सभी के जीने के लिए जल अनिवार्य रूप से आवश्यक है, किंतु हमारी भूलों और अनदेखी के कारण आज जल संकट एक गंभीर समस्या के रूप में उभर रहा है।

जल संकट के कारण- पेयजल संकट के उपरोक्त तीन प्रमुख कारणों- पर्यावरणीय असंतुलन, प्रदूषण और भूमिगत जल के दोहन में से किसी भी कारण को रोक पाने में अभी तक हम सक्षम नहीं हैं।

जल संकट की समस्याएँ- आज भारत ही क्या विश्व के सभी देश जल-संकट को भविष्य की गंभीर समस्या मान रहे हैं और इस समस्या के समाधान के लिए निरंतर चेतावनी दे रहे हैं। यूँ तो पृथ्वी का दो-तिहाई भाग जल ही है, लेकिन इसमें से समूचा जल उपयोग के लायक नहीं है। कुछ तो खारे समुद्र के रूप में है और कुछ बर्फ के रूप में जमा हुआ है। पेयजल का अधिकांश भाग हमें बहती हुई नदियों और भूमिगत जल से प्राप्त होता है। यह भूमिगत जल अत्यधिक दोहन के कारण निरंतर घटता जा रहा है। वर्षाचक्र पेड़-पौधों तथा वन्य क्षेत्रों पर निर्भर है। आधुनिकता की अंधी दौड़ में मनुष्य ने जहाँ एक ओर वन संपदा को नष्ट करके वर्षाचक्र को बिगाड़ दिया है, वहीं दूसरी ओर उद्योगों के घातक रासायनिक कचरे को बहाकर नदियों को नाला बना दिया है। यही नहीं कुछ उद्योगों में तो थोड़े से लाभ के लिए जहर सरीखे कचरे को पाइप लाइन से पृथ्वी में डाल दिया जाता है। दूसरी ओर, जनसंख्या के बढ़ते दबाव के कारण हम लगातार भूमिगत जल का दोहन करने में जुटे हुए हैं जिससे अब जलस्तर तीस-चालीस फीट से नीचे गिरते-गिरते तीन सौ-चार सौ फीट तक जा पहुँचा है।

समाधान- वनों की रक्षा करके पर्यावरण संतुलन को बनाए रखा जा सकता है। नदियों में बढ़ते प्रदूषण को रोकने के लिए हमें अत्यंत कड़े कदम उठाने होंगे। भूमिगत जल को दूषित

करने वाले लोगों को कानूनी रूप से कठोर दंड देना होगा और इस अपराध को रोकना होगा।

उपसंहार– सूखती हुई नदियों और कम होते जंगलों के कारण देशभर में रेगिस्तान बढ़ते जा रहे हैं। सरकार यद्यपि इस ओर से चिंतित है, लेकिन मानव जीवन पर मंडराते खतरे को रोकने के लिए अभी और बहुत मजबूत कदम उठाने की आवश्यकता है।

(2) ओलंपिक खेल

संकेत बिंदु : प्रस्तावना – ओलम्पिक खेलों का इतिहास ✻ ओलम्पिक खेलों का आयोजन ✻ उपसंहार

प्रस्तावना – ओलम्पिक खेलों का इतिहास– ओलम्पिक खेलों का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है। कहा जाता है कि प्राचीन ओलम्पिक खेलों का जन्मदाता **हरक्युलिस** था। यह ईसा से लगभग 1200 वर्ष पहले की बात है जब यूनान के ओलम्पिया में कुछ खेल खेले जाते थे। प्राप्त जानकारी के अनुसार ईसा पूर्व 776 में ओलम्पिया नगर में आयोजित सबसे पहले ओलम्पिक खेल मेले में एकमात्र प्रतियोगिता में विजयी युवक **कोरोबस** को ओलम्पिया के **जीयस मंदिर** के पवित्र प्रांगण में लगे जैतून के वृक्ष की पत्तियों से बनाए गए मुकुट से सम्मानित किया गया था। कालांतर में कब ये स्पर्धाएँ समाप्त हो गई, इसका विशेष विवरण नहीं मिलता। सन् 1875 से 1881 के बीच इतिहासकारों ने प्राचीन ओलम्पिया के अवशेषों को खोज निकाला था। इन्हीं दिनों बैरन पियरे द कुबर्तिन भी युवा लोगों को स्वस्थ खेल भावना से परिचित कराने के लिए पुनः प्राचीन ग्रीक खेलों को शुरू कराना चाह रहे थे। वे फ्रांस के एक शिक्षा–शास्त्री थे और युवा कल्याण कार्यों में रूचि रखते थे। उनका मानना था कि शारीरिक और मानसिक विकास एक सिक्के के दो पहलू हैं। इसी उद्देश्य से सन् 1888 में, मात्र 26 वर्ष की आयु में उन्होंने **एकविल संस्था** की स्थापना की।

ओलम्पिक खेलों का आयोजन– 23 जून 1894 को ओलम्पिक खेल फिर से शुरू करने के लिए पेरिस अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की गई। इसमें बारह देशों के दो हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया। उन्हें कुबर्तिन ने ओलम्पिक खेलों की भावना इस प्रकार समझाई– ओलम्पिक खेलों में महत्वपूर्ण बात जीतना नहीं, बल्कि उनमें भाग लेना है। जीवन में आवश्यक तथ्य विजय पाना नहीं है, अपितु अच्छी तरह जमकर संघर्ष करना है। लोगों ने उनकी बात का समर्थन किया और इस प्रकार महान ओलम्पिक परम्परा पुनः जीवित हो उठी। ओलम्पिक खेल कोई देश नहीं, बल्कि उसका एक शहर आयोजित करता है। इसलिए प्रत्येक चार वर्षों के अंतराल पर होने वाले ओलम्पिक खेलों के नाम उस शहर से जुड़े होते हैं। जैसे सन् 2004 में एथेंस में हुए ओलम्पिक खेल को **एथेंस ओलम्पिक** कहा जाता है न कि यूनान ओलम्पिक।

उपसंहार– भारत ने सर्वप्रथम सन् 1900 में पेरिस में होने वाले दूसरे ओलम्पिक खेलों में भाग लिया। उस समय ब्रिटेन में रहने वाले नार्मन प्रिचर्ड ने भारत का प्रतिनिधित्व किया था। उसे 200 मीटर की दौड़ में चाँदी का तमगा मिला था। अगले 20 वर्षों तक भारत ने किसी भी ओलम्पिक में भाग नहीं लिया। सन् 1924 में पेरिस खेलों में भारत की नेशनल ओलम्पिक कमेटी भी बनी। सन् 1928 में एम्सटर्डम ओलम्पिक में भारत की हॉकी टीम ने स्वर्ण पदक जीता। तब से लेकर अब तक भारत सहित दुनिया के विभिन्न देशों ने ओलम्पिक में नई–नई उपलब्धियाँ हासिल की हैं। प्रत्येक चार वर्ष में होने वाले खेलों के इस महाकुंभ का इंतजार खेल जगत से जुड़े लोग बेसब्री से करते हैं। राज्यवर्धन सिंह राठौड़, अभिनव बिंद्रा, साक्षी मलिक, सुशील कुमार, सानिया मिर्जा, पी.वी. सिंधु आदि खिलाड़ियों ने समय–समय पर पदक जीतकर भारत को गौरवान्वित करने का कार्य किया है।

(3) सूचना प्रौद्योगिकी का समाज पर प्रभाव

संकेत बिंदु : सूचना प्रौद्योगिकी क्या है ✻ इसके लाभ ✻ सूचना ढाबा ✻ उपसंहार

सूचना प्रौद्योगिकी क्या है– सूचना प्रौद्योगिकी को एक ऐसी प्रौद्योगिकी के रूप में परिभाषित किया गया है जो दुनिया में किसी भी व्यक्ति के साथ कहीं भी होने वाली घटना या प्रसंग के बारे में संपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराती है। सूचना को समाज के विकास का मूल स्रोत कहा जा सकता है।

इसके लाभ– सूचना प्रौद्योगिकी की बदौलत निकट अतीत में कुछ ऐसे अभूतपूर्व व्यापक लेकिन कल्पनातीत तकनीकी विकास हुए जिन्होंने दुनिया में रह रहे तमाम लोगों को एक ही नेटवर्क से जोड़ना संभव कर दिया। आज के समाज को सूचना समाज कहा जाता है। सूचना महामार्ग के जरिये आम नागरिकों को एक–दूसरे से जोड़ने का काम होता है। इन महामार्गों पर सूचना और आँकड़ों के प्रवाह ने घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए समाज की रचना की है।

समाज का हर नागरिक विश्व सूचना तक पहुँच सकता है। वह असंख्य स्रोतों में से किसी से भी ज्ञान हासिल कर सकता है। एक आम व्यक्ति इंटरनेट और ई–मेल के जरिये किसी भी क्षेत्र के विशेषज्ञ तथा डॉक्टर से सम्पर्क कर सकता है और श्रेष्ठ चिकित्सकीय परामर्श हासिल कर सकता है। मरीज के वीडियो चित्र, ईसीजी व अन्य चिकित्सकीय रिपोर्ट आदि भी जाँच के लिए डॉक्टर को इसी माध्यम से भेजी जा सकती है। यही बात विशेष शिक्षकों के मामले में भी लागू होती है। आज दुनिया के किसी भी कोने में रह रहे लोगों को बुद्धिमान व्यक्तियों का परामर्श उपलब्ध है।

सूचना ढाबा– नए सूचना समाज ने सूचना ढाबों को जन्म दिया है जो कोने–कोने में कार्यरत है। नागरिक अब इन ढाबों के जरिए करों का भुगतान या सरकारी दस्तावेज प्राप्त कर सकते हैं। जो शहरी नागरिक अपने निजी इंटरनेट कनेक्शन का निर्वाह नहीं कर सकते, वे भी ई–मेल सेवा, वीडियो फोन और ई–कॉमर्स के जरिये इसका फायदा उठा सकते हैं। किसी

भारतीय गाँव में रहने वाली उस 80 साल की वृद्धा की खुशी की कल्पना कीजिए जो अपने घर के पास बने सूचना ढाबे पर जाकर हजारों मील दूर बैठे अपने पोते से संपर्क कर सकती है।

उपसंहार– आज विश्व ग्राम की छः अरब से अधिक जनसंख्या की सूचना सहक्रिया, ज्ञान और बुद्धि के जरिये समाज का सर्वांगीण विकास हो रहा है। वसुधैव कुटुंबकम् का आदर्श साकार होने वाला है।

12. कुसुम लता मकान नं. 15 कृष्ण बिहार सोसाइटी गुरूग्राम सेक्टर 12ए, हरियाणा की ओर से नवभारत टाइम्स के मुख्य संपादक को बढ़ती महँगाई के प्रति चिंता जताते हुए एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए। 5

उत्तर :

सेवा में,
श्रीमान संपादक महोदय,
नवभारत टाइम्स
बहादुर मार्ग,
नई दिल्ली–110002

विषय : बढ़ती महँगाई के संबंध में।

महोदय,
मैं आपके दैनिक समाचार–पत्र **नवभारत टाइम्स** के माध्यम से सरकार का ध्यान बढ़ती महँगाई की ओर आकर्षित करना चाहती हूँ। महँगाई के कारण आम आदमी का जीवन –यापन मुश्किल हो गया है जिसके कारण रोजमर्रा की आवश्यकताओं की पूर्ति भी वह पूर्ण रूप से नहीं कर पा रहा है। इस बढ़ती महँगाई के कारण सभी लोग बहुत परेशान हैं।

अतः मेरा आपसे अनुरोध है कि आप अपने समाचार–पत्र के माध्यम से महँगाई की इस समस्या की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट करवायें।

सधन्यवाद।
भवदीया
कुसुम लता
म.नं. 15
कृष्ण बिहार सोसाइटी,
गुरूग्राम, सेक्टर–12ए, हरियाणा।
दिनांक : 25 जुलाई, 2018

अथवा

कृष्णा (गाजियाबाद) निवासी रमेश गुप्ता की ओर से एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में उनके मित्र अखिल शर्मा को लिखिए, जिसमें दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में प्रवेश पाने में मिली सफलता पर उसे बधाई दी गई हो।

उत्तर :

कृष्णा,
गाजियाबाद।
दिनांक : 25 जून, 2018

प्रिय मित्र अखिल,
सप्रेम नमस्ते।
मुझे कल ही पता चला कि तुम्हारा नामांकन दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में हो गया है। इसके लिए मेरी ओर से बधाई स्वीकार करो। मित्र, तुम प्रारंभ से ही मेहनती प्रकृति के रहे हो। नियमित रूप से पढ़ाई में लगे रहना तुम्हारा स्वभाव बन गया है। यही कारण है कि सफलता ने तुम्हारा वरण किया है। मेरे मम्मी–पापा भी तुम्हें बधाई के साथ–साथ ढेर सारा आशीर्वाद दे रहे हैं। मेरी हार्दिक शुभकामना है कि तुम इसी प्रकार जीवन के विविध क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त करो।

घर पर गुड़िया को मेरा स्नेहाशीष कहना और चाचा–चाची जी को चरण स्पर्श। मेरी भी आई.आई.एम की परीक्षा सन्निकट है। फिर बाद में पत्र लिखूँगा।

पत्रोत्तर की प्रतीक्षा में,
तुम्हारा अभिन्न मित्र
रमेश गुप्ता

13. हिमालया हर्बल क्रीम के लिए 25–50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए। 5

उत्तर :

क्या आप कील, मुँहासों और त्वचा के दाग–धब्बों से परेशान आ चुके हैं? तो इस्तेमाल कीजिए–

हिमालया हर्बल क्रीम

दाग–धब्बे मिटाए
त्वचा चमक–दमक जाए।

असर एक हफ़्ते के अंदर

सभी प्रतिष्ठित दुकानों में उपलब्ध।

अथवा

नहाने के साबुन का एक आकर्षक विज्ञापन 25–50 शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

तन की सुंदरता निखारे, आपका रूप सँवारे।

सौम्य और सुंदर

नीरोग साबुन

आज ही खरीदें

सबके रूप-सौंदर्य का राज़।
रखे आपको हमेशा खुशमिज़ाज।

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online